प्राक्कथन

प्राक्कथन

हिन्दी साहित्य में महिला लेखन की एक समृद्ध और सशक्त परंपरा रही है। उन्होंने प्रत्येक काल में अपनी कालजयी कृतियों से साहित्य के पन्नों को अलंकृत किया है। आज़ादी मिलने के पहले कथाक्षेत्र में ही नहीं अपितु पूरे साहित्यक क्षेत्र में गिनी-चुनी लेखिकाओं का पदार्पण हुआ था जिनमें महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान तथा सुमित्राकुमारी सिन्हा के नाम प्रमुख हैं। लेखन की मात्रा की दृष्टि से इस समय के महिला लेखन का परिमाण न्यून मात्र है किन्तु लेखन के प्रकार और गुण की दृष्टि से काफी समृद्ध है। यह एक सार्वभौम सत्य है कि नारी के सहयोग, त्याग, सहिष्णुता, ममता, सौहार्द और सर्जनशीलता के बिना संसार का गतिचक्र रुक जाएगा।

स्वतंत्रता के बाद विशेषकर साठोत्तर युग में बहुत तेज़ी से महिलाओं का वर्चस्व समाज के सारे क्षेत्रों में विशेषकर साहित्यिक क्षेत्र में प्रभावपूर्ण ढंग से स्थापित हुआ है। नारी की स्थिति गति पुरुषवर्चस्व समाज में यद्यपि शोचनीय रही है फिर भी यह कहना भी कदाचित् निरर्थक नहीं होगा कि साहित्य और समाज हमेशा नारी केन्द्रित रहा है। समकालीन संदर्भ में स्वतंत्र, भावात्मक रूप से परिपक्व, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक रूप से सजग एवं ज्वलित नारी ने सारे बन्धनों को चुनौती देकर साहित्यक क्षेत्र में पदार्पण किया और वे अपनी कालजयी लेखनी से अपने साहित्य को भी कालजयी बना रही हैं। सारांश यह है कि समकालीन महिला उपन्यासकार बहुस्तरीय सामाजिक यथार्थ को अपने उपन्यासों में रूपायित करने में सफल ही रही हैं। उनके उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ के चित्रण के ज़रिए मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा हुई है। उसपर शोध करना बिल्कुल हमारा वैयक्तिक और सामाजिक दायित्व ही है।

मेरे शोध प्रबन्ध का विषय है - **"समकालीन हिन्दी महिला उपन्यासकारों के उपन्यास : सामाजिक यथार्थ के विभिन्न आयाम।"** प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में बाँटकर शोध विषय का गहरा अध्ययन किया गया है। शोध प्रबन्ध के अन्त में **उपसंहार** है।

पहला अध्याय - **'यथार्थ के प्रकार और साहित्य'** है। 'यथार्थ' शब्द अंग्रेज़ी के 'रियालिटी' शब्द का पर्याय है और 'यथार्थवाद' अंग्रेज़ी के 'रियालिसम' शब्द का पर्याय है। यथार्थवाद के उद्‌भव तथा प्रचलन उन्नीसवीं शति के उत्तरार्द्ध में ही एक सशक्त साहित्यक आन्दोलन के रूप में हुआ। यथार्थवादी साहित्यकार जीवन और समाज की यथार्थता के विभिन्न पहलुओं को उपस्थित करता है। जीवन की सच्ची अनुभूति यथार्थ है और उसकी कलात्मक अभिव्यक्ति 'यथार्थवाद' है। यथार्थवादी साहित्यकार के लिए जीवन का कोई भी क्षेत्र नगण्य, उपेक्षित अथवा अस्पृश्य नहीं रह गया है। 'यथार्थवाद' समाजवादी, आदर्शोन्मुख, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, सामाजिक जैसे विविध क्षेत्रों में अपनी अर्थव्याप्ति दिखाकर चलता है। साहित्य समाज का दर्पण है इसलिए सामाजिक यथार्थ की बहुस्तरीय अभिव्यक्ति साहित्य के माध्यम से ही पूर्ण हो सकती है। प्रस्तुत अध्याय में 'यथार्थ' और 'यथार्थवाद' के विविधस्तरीय अर्थ और परिभाषाएँ दी गयी हैं। यथार्थवाद के भेद के रूप में समाजवादी यथार्थवाद, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, प्रकृतिवादी यथार्थवाद, अतियथार्थवाद, ऐतिहासिक यथार्थवाद, सामाजिक यथार्थवाद का अध्ययन किया गया है। सामाजिक यथार्थ के अनेक पहलू जैसे पारिवारिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में व्याप्त यथार्थ को ढूँढ निकालने का प्रयास हुआ है।

दूसरा अध्याय - **'सामाजिक यथार्थ : पारिवारिक परिदृश्य में'** है। इस अध्याय में समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में चित्रित संयुक्त परिवार की टूटन और अणुपरिवार की प्रतिष्ठा, पारिवारिक संबन्धों के बदलते आयाम, माँ-सन्तान, पिता-सन्तान, आदर्श पति-पत्नी संबन्ध, विघटित पति-पत्नी संबन्ध, बहन-बहन, भाई-बहन, भाई-भाई संबन्ध, परिवार के अन्य संबन्ध, पारिवारिक ढाँचे को तोड़ता मुक्त यौन संबन्ध, प्रेम, प्रेमविवाह और अंतर्जातीय विवाह, दहेज और अनमेलविवाह, विवाह की प्राचीन सांस्कारिकता का लोप आदि विषयों पर आलोचनात्मक अध्ययन किया है। समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में पारिवारिक संबन्धों की टूटन, विघटन, बिखराव और मूल्यों के संकट को निरपेक्षभाव से चित्रित किया गया है। मध्यवर्गीय भारतीय परिवारों के जीवन्त चित्र को उन्होंने यथार्थ और सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है। उन्होंने यह दर्शाया है कि आज व्यक्तिस्वातंत्र्य की जिद, रोज़ी रोटी की तलाश, आर्थिक अभाव, बदलती जीवनशैली, विज्ञान तथा तकनीकी विकास, आधुनिकीकरण, पश्चिमी अनुकरण, आर्थिक अभाव और संबन्धों के मध्य समाज होता माधुर्य जैसे कारणों से संयुक्त परिवार धीरे-धीरे टूटते जा रहे हैं।

नारी की आर्थिक निर्भरता, समानाधिकार की भावना, नारी की अस्तित्ववादी विचारधारा, पुरुष की अहंवादी वृत्ति, वैचारिक भिन्नता, विवाह-बाह्य आकर्षण, महत्वाकांक्षा, अनमेलविवाह, पुरुष मेधावी वृत्ति की अधिकता, मुक्तयौन संबन्ध, सन्देहवृत्ति, आर्थिक अभाव आदि के कारण विघटित दाम्पत्यसंबन्धों के यथार्थ चित्रण के साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्यों के संबन्धों की शिथिलता और रिक्त संवेदनाओं का भी चित्र इन लेखिकाओं ने खींचा है। नये युग के नये जीवनमूल्यों एवं जीवनपद्धतियों के प्रभाव से उपजे प्रेमविवाह और अंतर्जातीय विवाह की सफलता और असफलता का चित्रण इनके उपन्यासों में सफल रूप से हुआ है। दहेज की कमी के कारण, अनमेल विवाह की शिकार बनी नारी के दारुण जीवन को भी ये लेखिकाएँ भूल नहीं पाती हैं। दहेजप्रथा को रोकने, योग्य जीवनसाथी को चुनने व धार्मिक सुस्थिरता को कायम रखने के लिए आज प्रेम और अंतर्जातीय विवाह को मान्यता मिल रही है किन्तु यहाँ भी असफलता की काली परछाई हम देख सकते हैं। इसका भी प्रभावी चित्रण उनके उपन्यासों में उपलब्ध है।

तीसरा अध्याय - **'सामाजिक यथार्थ : अर्थ और राजनीति के परिप्रेक्ष्य में'** है। आज अर्थ जीवन की धुरी बन गया है। आधुनिक जीवन में इन्सानियत की ऊँचाई नापने का पैमाना मात्र अर्थ रह गया है। इसलिए मनुष्य इन्सानियत को भूलकर अर्थप्राप्ति की भागदौड में शामिल होते हैं। अर्थोपार्जन के लिए नैतिक - अनैतिक, मान्य-अमान्य कार्य कर भ्रष्टाचार को वे बढ़ावा दे रहे हैं। पैसों के आगे प्रेम, सहानुभूति, ममता, भ्रातृत्व जैसे नैतिकमूल्यों को महत्व नहीं है। पैसे की आड़ में मानवीय संबन्ध भी निस्सार व तुच्छ हो चुके हैं। आज भी देश की अर्थव्यवस्था पर पूँजीवादी शक्तियों का ऐसा शिकंजा कसा जा रहा है कि जनसाधारण की अभावग्रस्त स्थिति में जनता गरीबी, बेरोज़गारी, महँगाई, भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी का शिकार होती चली गयी। प्रस्तुत अध्याय में आर्थिक क्षेत्र में व्याप्त इन विसंगतियों का सटीक अध्ययन किया है।

समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में समकालीन घिनौनी, स्वार्थपरक, मूल्यहीन तथा अवसरवादी राजनीति का चित्र पाया जाता है। प्रजातंत्र के नाम पर कुर्सी हथियाने के हथकंडे, नोटों के बदले वोट की व्यावहारिक राजनीति, राजनीतिक दाँव-पेंच, सत्ताधारियों की स्वार्थ नीति, दलगत व जातिगत राजतंत्र, भ्रष्टाचार, सिफारिश और रिश्वत के बल पर पनप रही नौकरशाही तथा उनके तहत दमधुटनेवाले बेचारे लोगों की दीन-हीन अवस्था की सफल प्रस्तुति इन लेखिकाओं के उपन्यासों में हुई है। उन्होंने राजनीति की अर्थहीनता एवं भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के विरुद्ध

भी लेखनी चलाने का कार्य किया है। राजनीतिक यथार्थ के अंतर्गत व्याप्त सभी समस्याओं पर लेखिकाओं ने इशारा दिया है, लेकिन कम मात्रा में।

चौथा अध्याय - **'सामाजिक यथार्थ - धर्म और संस्कृति के परिवेश में'** है। धर्म और संस्कृति मानव उत्कर्ष के आयाम हैं किन्तु वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आविर्भाव से आज धार्मिक एवं नैतिक जीवन मूल्यों में बिखराव हो रहा है। धर्म मनुष्य को सच्चाई, पवित्रता, आत्मनियंत्रण, कर्तव्यपरायणता, सहिष्णुता जैसे आध्यात्मिक गुणों का निर्वाह करने की प्रेरणा देता था। किन्तु आज मानव ने धर्म को स्वार्थलाभ का साधन बनाया है। आज साधु-सन्त भी पाखण्ड और अधर्म की होड में लग रहे हैं। दूसरी तरफ जाति-पाँती तथा धर्मसंप्रदाय के कारण धर्म का रूप और भाव विकृत हो चुका है। महिला उपन्यासकारों ने धार्मिक चेतना को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में परखने के बाद अस्पृश्यता और धार्मिक बाह्याडंबर का विरोध किया है और उन्होंने इस सत्य को भी सिद्ध किया है कि जब तक धार्मिक अन्धविश्वास एवं रूढ़ियाँ न समाप्त होतीं तब तक न व्यक्ति का उद्धार हो सकता है, न देश का विकास भी। प्रस्तुत अध्याय में इस धार्मिक यथार्थ का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

समाज में सांस्कृतिक मान्यताएँ जैसे व्रत, पर्व, त्योहार तथा रीति-रिवाज़ हमारे सामाजिक जीवन और युगीनसभ्यता का अमूल्य धरोहर हैं किन्तु, आज के युग में जाति, संप्रदाय, धर्म के कुप्रभाव के कारण हमारी शानदार संस्कृति और मानवीय मूल्य नष्ट होते जा रहे हैं। महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में भारतीय संस्कृति के तत्व विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं। भारतीय संस्कृति की दिव्यता एवं भव्यता को परिपुष्ट करने के लिए उन्होंने काफी प्रयास किया है। उनके उपन्यासों में भारतीय संस्कृति की भावात्मक एकता को परिपुष्ट करने का प्रयास भी है। दूसरी और पाश्चात्यसभ्यता और संस्कृति के प्रभाव से विकृत हुई भारतीय संस्कृति का चित्रण भी है। इनमें मुक्त यौन संबन्ध, विवाह बन्धन की निरर्थकता, उपभोक्तावादी या बाज़ारवादी संस्कृति का प्रभाव दृष्टव्य है।

पाँचवाँ अध्याय - **'नारी जीवन यथार्थ'** है। समकालीन महिला लेखिकाओं ने नारी जीवन के विविध पहलुओं को अनुभूत सत्य के बल पर ईमानदारी के साथ चित्रित किया है। इनमें पुरुषवर्चस्वता के अधीन तडपती नारी, अकेलापन को झेलनेवाली नारी, विधवानारी, वेश्या नारी,

कामकाजी व आत्मनिर्भर नारी और विद्रोहिणी नारी आती है। नारी अधिक ईमानदार, निष्ठावान, कर्मठ, धैर्यवान और बलिदान करनेवाली है फिर भी सदियों से आज तक उसका शोषण चलता आ रहा है। जिसके पीछे सामाजिक बन्धन, सामाजिक रूढियाँ व पुरुषवर्चस्वता है। समकालीन महिलाओं के उपन्यासों में नारी जीवन के आन्तरिक और बाह्य जगत का चित्रण है। महिला उपन्यासकारों ने आधुनिक व परंपरागत जीवन मूल्यों के बीच तडपनेवाली, बलिदान करनेवाली व संघर्ष करनेवाली नारियों का जो चित्रण किया है जो स्वाभाविक और प्रभावी है। उन्होंने विधवाजीवन की समस्याओं को खींचने के साथ-साथ उनके उद्धार करने हेतु विधवा विवाह का समर्थन भी किया है। वेश्याओं के दर्दभरी जीवन को वाणी देने के साथ-साथ उन्हें ऐसे गर्त में डालनेवाली आर्थिक व्यवस्था पर प्रहार भी किया है।

शोध प्रबन्ध के अन्त में उपसंहार है, जिसमें उपर्युक्त पाँच अध्यायों का सार और निष्कर्ष है। समकालीन हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक यथार्थ को शब्दबद्ध करने में उनकी दृष्टि यथार्थवादी एवं मानवतावादी रही है। उनके उपन्यासों में अनुभूति की प्रामाणिकता है। उन्होंने सामाजिक यथार्थ के विविध पहलुओं को अपने अनुभव के बल पर सहज और स्वाभाविक रूप से चित्रित किया है। वे सामाजिक दायित्व और युगबोध की भावना से गहरे जुड़ी हुई हैं। भोगे हुए सामाजिक यथार्थ को शब्दबद्ध करने में वे सफल रही हैं किन्तु उनके उपन्यास मध्यवर्ग के सुख-दुःख, राग द्वेष और आशा आकाँक्षाओं से भरे हुए हैं। उन्होंने मध्यवर्गीय परिवार और नारी जीवन के यथार्थ को वैविध्य के साथ बडी गहराई, अधिकार एवं विस्तार से स्थापित किया है किन्तु आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक यथार्थ को रूपायित करने में कहीं-कहीं उनके उपन्यास अधिकांश फीके जान पड़ते हैं। कारण यह है कि समकालीन महिला लेखिकाएँ अधिकांशतः मध्यवर्गीय घरेलू महिलाएँ होने के कारण उनके अनुभवों का दायरा मध्यवर्ग के आसपास ही स्पष्ट हो उठता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि ये लेखिकाएँ हिन्दी साहित्य और भारतीय समाज को बिल्कुल एक नई दिशा दे रही हैं जो सराहनीय और मूल्यवान है।

उपसंहार के बाद प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूरा करने में जिन महानुभावों, विद्वानों तथा स्वजनों का सहयोग मिला उनके प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

सर्वप्रथम मैं ईश्वर के सम्मुख नतमस्तक हूँ क्योंकि उनके आशीर्वाद के कारण ही मैं अपना शोध प्रबन्ध पूर्ण कर पायी हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पत्तनमतिट्टा कैथोलिक्केट कॉलेज की वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. मिनि जॉर्ज के विद्वत्ता पूर्ण निर्देशन एवं प्रोत्साहन से ही संपन्न हुआ है। शोध प्रबन्ध के चुनाव से प्रस्तुति तक के हर कार्य में उनके उपदेश एवं स्नेहमय व्यवहार मेरे साथ रहे, जिससे मैं इस शोध-प्रबन्ध की पूर्ती में सफल हुई। शैक्षणिक और पारिवारिक कार्य में व्यस्त रहने पर भी उन्होंने इस शोधकार्य की पूर्ती के लिए बहुमूल्य योगदान दिया है। आपका प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व हमेशा दूसरों की सहायता करने के लिए तत्पर रहना है, इसका एहसास मुझे भी हुआ। उन्होंने मेरी इस शोध यात्रा के सारे उलझनों को सुझाव, निर्देशन एवं सहयोग देकर मुझे इस सीढ़ी तक पहूँचा दिया। मेरी आदरणीय गुरुजी की मैं नितान्त आभारी हूँ। इस सिलसिले में मैं डॉ. मिनि जॉर्ज के पति डॉ. कोशी. पी. जॉर्ज और इकलौती बेटी अमला अन्ना कोशी के प्रति भी आभारी हूँ क्योंकि उनके स्नेह, त्याग और सहयोग से ही मिनि टीचर अपना कीमती समय हमारे लिए बाँट सकती हैं।

पत्तनमतिट्टा कैथोलिकेट कॉलज के प्रिन्सिपल आदरणीय डॉ. माथ्यू. पी. जोसफ के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मेरे शोधकार्य की प्रगति के लिए समय-समय पर मुझे आवश्यक सुविधाएँ दी हैं।

कैथलिक्केट कॉलेज के हिन्दी विभाग की भूतपूर्व अध्यक्षा डॉ. मरियाम्मा वी. मैथ्यू और वर्तमान अध्यक्षा प्रोफसर कल्पना जी और विभाग की अन्य प्राध्यापक बन्धुओं को हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

मेरे पूजनीय माँ-बाप पति देव प्रसन्नकुमार और प्यारी बेटियाँ - आर्या और आरती ने मुझे इस शोध कार्य की लक्ष्यप्राप्ति के लिए आवश्यक प्रोत्साहन, सहारा तथा शुभाशिश आदि से अन्त तक दिए। परिवार के अन्य सदस्य तथा सज्जनों की शुभकामनाएँ भी इस शोधकार्य में मुझे प्रेरणादायक बनीं। इन सबको मैं धन्यवाद देती हूँ।

इस शोधग्रन्थ के सामग्री-संकलन में आवश्यक संदर्भ ग्रन्थों को उपलब्ध कराने में कुछ पुस्तकालयों के ग्रन्थपाल, ग्रन्थपालिकाओं एवं उनके सहकारी, कर्मचारियों ने मेरी सहायता की है। मुझे सर्वाधिक सहायता कैथलिकेट कॉलज के ग्रन्थालय से प्राप्त हुई है। इस सिलसिले में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (एरणाकुलम) का ग्रन्थालय, तिरुवनन्तपुरम यूनिवर्सिटी कॉलेज के हिन्दी विभाग का ग्रन्थालय, कार्यवट्टम हिन्दी विभाग का ग्रन्थालय और कोच्चिन विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय के अधिकारी लोग आते हैं। उन सभी के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ।

शोध प्रबन्ध का सुन्दर और विशुद्ध टँकण पूर्ण मनोयोग के साथ करनेवाले श्री उदयन कलमश्शेरी के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहूँगी। इस क्षेत्र में उनकी कर्तव्यनिष्ठा, दायित्वबोध और स्नेहमय व्यवहार प्रशंसनीय है। साथ ही साथ मेरे शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से मुझे प्रेरणा व प्रोत्साहन दे रहे दोस्तों व सारे हितैषियों के प्रति भी खुशी के साथ आभार प्रकट करती हूँ।

सविनय

पत्तनमतिट्टा प्रभा. सी

28-01-2016